International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 491-492

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 491-492
www.allresearchjournal.com
Received: 11-11-2017
Accepted: 14-12-2017

नीतू कुमारी
शोध प्रज्ञा, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
नीतू कुमारी
शोध प्रज्ञा, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

राबिन शॉ पुष्प की काव्य–यात्रा के विभिन्न आयाम

नीतू कुमारी

सारांशः
काव्यालोक वस्तुतः दिव्यालोक ही है जिससे श्रेय और प्रेय दोनों की साधना पूरी होती है। सुबह से रात तक विभिन्न क्रिया–कलापों के विभिन्न आयामों से गुजरना पड़ता है। हमारी प्रकृति और प्रवृत्ति का इसमें दिव्य और भव्य प्रतिफल सुरम्य होकर ढुकमता नजर आता है। रॉबिन शॉ पुष्प ने अपनी काव्य–साधना में श्रेय और प्रेम दोनों ही पक्षों को स्थान दिया हैं उनकी 'दो प्रेम कविताएँ', 'याद तुम्हारी' 'जन्म दिवस पर प्रेयसी के नाम.. ...' 'राष्ट्रभाषा' आदि कविताएँ इसके प्रमाण हैं।

प्रस्तावनाः
मनुष्य न केवल चिंतनशील प्राणी है बल्कि वह गमनशील प्राणी भी है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है, ''यात्रा के लिए निकलती रही है बुद्धि पर हृदय को साथ लेकर।'' [1] अगर केवल बुद्धि ही यात्रा पर निकले तब तो 'जैसे को तैसा' वाला दृश्य ही दृष्टिगोचर होगा। सोचा जाय, यदि केवल हृदय ही यात्रा पर निकले तब ग्यारह रसों में किस रस का प्रवाह अधिक होगा, किसका आस्वादन सर्वाधिक होगा? यह देश–काल–परिस्थिति पर निर्भर है और रुचि, क्षमता, प्रकृति, प्रवृत्ति, परिवेश को भी नकारा नहीं जा सकता है। तिरस्कार और स्वीकार तदुपरान्त अंगीकार में भी विकार–निर्विकार के भाव परिलक्षित होते रहे हैं। सामाजिक संरचना में लक्षण–प्रयोजन, गुण–कर्म, स्वार्थ–निःस्वार्थ, रीति–नीति, लोक–वेद, भोग–त्याग, उचित–अनुचित, सगुण–निर्गुण, घृणा–प्रेम, क्षमा–दंड, सृजन–संहार आदि के दर्शन स्वतः परत–दर–परत होते रहते हैं।
हृदय भाव–भूमि पर प्रकृति की आकृति जब अंकित होती है, तब हृतंत्री झंकृत हो जाती है और मन–वीणा की रागिनी फूट पड़ती है। प्रथम दृष्ट्या भले ही यह 'स्वांतः सुखाय' होती है परंतु बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय तो हो ही जाती है। विद्वान् लोग अक्सर कहा करते हैं, ''साहित्य समाज का दर्पण है।'' लेकिन विशेषण–विपर्यय ब्याजस्तुति से यदि यह कह दिया जाय कि समाज साहित्य का दर्पण है तो क्या यह सर्वथा अनुचित होगा? 'पुष्प जी' के साहित्य–बोध से कदाचित ऐसा नहीं लगता है। राधा का मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है ऐसा तो बहुत लोग कह सकते हैं लेकिन 'देव' ही ऐसा कह सकते हैं कि–

''आरसी से अम्बर में आभा–सी उजारी लगै
प्यारी राधिका को प्रतिबिम्ब सो लगत–चंद।'' [2]

और तब जाकर प्रभावस्वरूप विभिन्न तर्कादि प्रकट होते हैं। हमारी आँखें क्या देखती हैं, क्या देखना चाहती हैं, हम अपनी ओर का महत्त्व कितना जानते हैं। ये सारी बातें हमारी बौद्धिकता, तार्किकता, काल्पनिकता, धार्मिकता, आध्यात्मिकता, वैज्ञानिकता, मनोवैज्ञानिकता, सामाजिकता, राजनीतिकता, आर्थिकता और कमोवेश हमारी संस्कारगत सभ्यता पर निर्भर करती हे। पूर्वाग्रह, दुराग्रह, सत्याग्रह और संकुचित क्षुद्राग्रह के भाव भी निर्मूल नही हो सकते। विभिन्न पंथ और जाति की रीति–नीति भले ही अलग हों लेकिन गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के भाव'' सवाई ऊपरे मानुषेर सत्य'' [3] को सर्वथा झुठलाया नहीं जा सकता। 'होम करते हाथ जलना' क्या खराब है! जी नहीं। काव्य–प्रयोजन के अर्थ गांभीर्य आज भी प्रासंगिक हैं, ''काव्य अर्थकृते व्यवहारविदे...'' [4]
साथ ही–

''जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।
जे बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ।।'' [5]

यशपाल–प्रेरित 'पुष्प' उनकी आशा पर खड़े उतरे और साहित्य–जगत् में अपना एक खास मुकाम

बना बैठे। भगवती चरण वर्मा के सम्पर्क–सुख से अद्‌भुत अनुभूति प्राप्त हुई जो इनकी काव्य–शक्ति बनी। 'चरैवेति दर्शन' के अनुसरण से लिखते रहे, लिखते रहे, गोताखोर की तरह साहित्य–सागर में गहरे डुबकी लगाकर काव्यात्मक मोती बटोरते रहे, बाँटते रहे। अर्थात् हिम्मत से खुशनसीबी मिलती है। मोती छोटा हो, बड़ा हो, कोई बात नहीं, मोती होना चाहिए, चमकदार मोती। इच्छा, क्रिया और ज्ञान के समुच्चय से सच्ची निष्ठा से, साधना से सफलता मिलती है। तब जब काव्य–जगत् बनता है, वह अनूठा होता है, निराला होता है और अर्न्तजगत् तथा बाह्यजगत् आलोकित हो जाता है। विफलता सफलता में परिवर्तित हो जाती हे। प्रेम जगत् का सार है। यह सिर्फ पोथी पढ़ने से प्राप्त नहीं होता है। भावभीनी श्रद्धा, क्रिया और प्रतिभा से प्रेमांचल मिलता है जहाँ केवल प्रेमानुभूति होती है–'पुष्प' के शब्द–कलरव से–

'प्रेम'– ''पत्ते की नोंक पर–
ओस बूँद
सुबह–सुबह की
अब टपकी.....अब टपकी.....
यही रहने,
न रहने की स्थिति
प्रेम की अद्‌भुत अनुभूति।'' [6]

'याद'– ''जैसे पलकों में झपकी
या दरवाजे पर थपकी
याद तुम्हारी आई
कुछ वैसे, तब की अब की!'' [7]

जिन्दगी की मेहरबानी तो रहती ही है, मगर प्रियतमा बिना जिंदगी का कोई अर्थ नहीं–

सुना है, कि हम पे मिहरबां है जिंदगी
तुम्हारे बिना मगर कहाँ है जिंदगी।

जन्म दिन तो अनूठा होता है, हर साल नयी जिंदगी का कोमल संकल्प–

''पाक ख्याल–सी आज, तू सबसे पहले याद आयी ज्यों
भोर की पहली किरन, ताल में उतरे नहाने को।'' [8]

'घर' बनता है सद्‌भावना प्रेम और मेल–मिलाप से मगर स्वार्थ से अलगाव होता है–

''इस शहर के
फुटपाथों पर
साथ–साथ चलते हुए.....
हमने देखा था–
एक घर का सपना
जो हो अपना,
और जब सपना
घर बन गया,
हमें लगा–
दुख के बादल छँट गए.....
मगर हुआ ये–
हम अलग–अलग
कमरों में बँट गए'' [9]

बेटी ममता की मूर्ति होती है और माता–पिता के सुख की जड़ होती है लेकिन उसके जाते ही माँ का प्रामाणिक दुःख झलक उठता है–

''तुलसी –चौरे पर
जल ढ़ालते हाथ,
गाय को–
सानी देते हाथ,
दीवार पर–
.....
.....
ट्रिगर पर होगी।'' [10]

बेटी का दुःख भी हृदय को झकझोरता है–
माँ के प्रति उसकी जिज्ञासा द्रष्टव्य है–

''बहुत मन करता.....
तुम्हारी तरह
सुबह–सुबह उठकर
गंगा स्नान कर आऊँ,
.....
.....
अब तुम–
कहाँ रह रही हो माँ? [11]

देशी एकता सर्वोपरि है– दिव्य प्रकाश है–दिव्य भाव है–

''कौमी एकता क्या हैं?
एक दिया है.....'' [12]

वस्तुतः पुष्प जी बहुआयामी कविता के सिरजनहार हैं जहाँ उद्यान के दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं।

निष्कर्ष

शिक्षा/संदेश–कविता की दुनिया मानवीय दुनिया का ही एक जीवंत प्रतिबिम्ब है, जहाँ हम विविध भावों के दर्शन कर अपने लिए पाथेय प्राप्त कर जीवन को सार्थक बनाने का संकल्प लेते हैं। कवि के रूप में पुष्पजी ने जीवन के विविध पक्षों और विविध भावों का चित्रण किया है। एक ओर प्रेम–जैसी पूर्णतः निजी वस्तु और भाव को उन्होंने अपनी कविता का वर्ण्य–विषय बनाया है, तो दूसरी ओर कौमी एकता, राजभाषा–राष्ट्रभाषा जैसे सार्वजनिक विषय से सम्बन्धित विचार इन्होंने अपनी कविता में व्यक्त किये हैं। इनकी दृष्टि में प्रेम का सार है, बेटियाँ ममता की भण्डार हैं, राष्ट्रभाषा और राज्यभाषा राष्ट्र जीवन का आधार है।

संदर्भ–सूची

1. चिंतामणि, भाग–1 (रामचन्द्र शुक्ल) निवेदन, पृ०–5
2. क्षितिज, भाग–2, पृ०–25
3. रवीन्द्रनाथ रचनावली
4. काव्यप्रकाश, आचार्य मम्मट, काव्यप्रयोजन–प्रसंग
5. कबीर रचनावली
6. रॉबिन शॉ पुष्प रचनावली खण्डः चार (विविध–1) सम्पादन डॉ० गीता पुष्प शॉ प्रो० जॉयस शीला शाल शॉ अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, दिल्ली, 2012, पृष्ठ संख्या–15
7. वही, पृष्ठ संख्या–16
8. वही, पृष्ठ संख्या–20
9. वही, पृष्ठ संख्या–30
10. वही, पृष्ठ संख्या–36–37
11. वही, पृष्ठ संख्या–38
12. वही, पृष्ठ संख्या–53